



प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा युवा सीईओ और स्टार्टअप को 17 अगस्त 2017 को प्रवासी भारतीय केंद्र में किये गए सम्बोधन का मूल पाठ

Posted On: 17 AUG 2017 10:00PM by PIB Delhi

Friends, आज मेरा काम आप लोगों को सुनने का था, आप लोगों को समझने का था। आप को सुनना और आपका समझना इसलिए जरूरी है कि मैं सार्वजनिक रूप से भी ये कहता रहता हूँ और ये मेरा conviction भी है। कितना बड़ा देश, अगर सरकार इस भ्रम में है कि वो चला रही है, तो ये कहां जाएगा; ये कहना कठिन है। एक शैल चतुर्वेदी करके, बीती हुई पीढ़ी के कवि थे। उन्होंने एक बड़ा मजेदार हास्य-व्यंग्य लिखा था- और वो कहते थे कि एक नेताजी कार में जा रहे थे, और नेताजी ने ड्राइवर से कहा, आज कार में चलाऊंगा। तो ड्राइवर ने कहा साहब, मैं उतर जाऊंगा। नेताजी ने पूछा, क्यों? तो ड्राइवर ने कहा सर, ये कार है सरकार नहीं, जो कोई भी चला ले। और इसलिए और हमारे देश में ये कोई नई कल्पना नहीं है। थोड़ा सा पीछे चले जाएं हम, ज्यादा नहीं, 50 साल करीब। तो हमें ध्यान में आना कि सरकार की presence बहुत ही कम स्थान पर थी। सामाजिक रचना ही ऐसी थी कि जो समाज व्यवस्थाओं को बल देती थी। अब कोई मुझे बताए कि ये स्थान-स्थान पर जो ग्रंथालय बने हुए हम देखते हैं, वो क्या सरकारों ने बनाए थे क्या? समाज के कुछ मुखिया, जिसमें जिनकी रुचि थी, उस काम को वे खड़ा करते थे। Even education, हमारे देश में जब education और उसके साथ रुपया-पैसा और व्यापार और व्यवसाय जुड़ गया, तब उसका रंग-रूप बदल गया। लेकिन एक जमाना था जब समाज में charity activity करने वाले लोगों ने पूरी education व्यवस्थाओं को विकसित किया था। और करीब-करीब dedicated भाव से किया था। Even जिस इलाके में पानी नहीं होगा तो पानी पहुंचाने का प्रबंध भी सामाजिक व्यवस्था के तहत होता था। हम राजस्थान, गुजरात की तरफ जाएं तो बावड़ी देखते हैं, वह कोई सरकारी प्रकल्प नहीं था। जन-सामान्य इन आंदोलनों को चलाता था। और समाज के जो मुखिया होते थे, वो इन चीजों को करते थे। और इसीलिए हमारे देश में सरकारों के द्वारा व्यवस्थाएं बनती होंगी, लेकिन विकास को वह हमेशा समाज की भिन्न-भिन्न रचनाओं के द्वारा, उनकी शक्ति के द्वारा, उनके सामर्थ्य के द्वारा, उनके समर्पण के द्वारा प्राप्त होता रहा है।

अब वक्त बदल चुका है, और इसलिए बदले हुए वक्त में हमने व्यवस्थाएं भी बदलनी होंगी। ये उस दिशा के प्रयास है कि समाज में इस प्रकार की शक्ति रखने वाले कोई धन-सम्पन्न होगा तो कोई ज्ञान सम्पन्न होगा, तो कोई अनुभव सम्पन्न होगा, तो कोई सेवा सम्पन्न होगा। ये, ये जो शक्तियां हैं, बिखरी पड़ी हैं। अगर एक बार उनको एक धागे में पिरो दिया जाए तो एक ऐसी फूलमाला बन सकती है, जो फूलमाला मां भारती को और अधिक सुशोभित कर सकती है। तो ये एक वो ही प्रयास है कि समाज में ऐसी जितनी भी शक्तियां हैं, उनको कैसे जोड़ा जाए?

अगर आप बारीकी से सरकार के कामों को देखते होंगे, जो मीडिया में आता नहीं है; क्योंकि बहुत सी चीजें होती हैं जो मीडिया के लायक नहीं होती हैं, लेकिन बहुत लायक होती हैं। आपने देखा होगा कि सरकार में पदमश्री और पदम-विभूषण, ये पदम अवॉर्ड; हमारे देश में पदम अवॉर्ड कैसे मिलते थे? आपने अगर कोशिश की होगी तो आपको रास्ता मालूम होगा। कोई नेता recommend कर दें, सरकार recommend करे मतलब कि वो भी politician होता है, वो recommend कर दे, और ज्यादातर जो politicians के doctor होते हैं, वो ही पदम के लिए लायक होते हैं।

हमने छोटा सा reform किया, हमने recommendation करने के लिए किसी की जरूरत नहीं है। Online कोई भी व्यक्ति खुद के लिए, किसी के लिए detail भेज सकता है। किसी ने कहीं अखबार में पढ़ा हो, कतरन भेज सकता है। भई देखिए ऐसे किसी भी इंसान के बारे में मैंने जाना था। और हजारों की तादाद में ऐसे लोगों की जानकारीयां आईं। ये young team, proper से किसी को जानती नहीं थी, चेहरा नहीं जानती थी। जो पड़ा हुआ है उसमें से उसने खोजना शुरू किया है और shortlist किया है। फिर जो कमेटी बनी थी उसने काम किया और आपने देखा होगा, ऐसे-ऐसे लोगों को पदमश्री मिल रहा है इन दिनों, कि जो unknown heroes हैं। अब आपने देखा होगा कि बंगाल का एक मुस्लिम लड़का, जिसको इस बार पदमश्री दिया। क्या था? तो उसकी अपनी मां मर गई, और कारण क्या था तो medical treatment संभव नहीं थी। और उस मां की मृत्यु से उसका मन हिल गया और उसने एक मोटरसाइकिल पर लोगों को patient कहीं है तो उठा करके डॉक्टर तक ले जाने के लिए अपना काम शुरू किया। खुद भी petrol खर्चा करता था, काफी कुछ मेहनत करता था। और उस पूरे इलाके में Ambulance Uncle के नाम से वो जाना जाने लगा। अब ये अपने-आप सेवा कर रहा था, आसाम के, बंगाल के उन इलाकों में। सरकार की ध्यान में आया, ऐसे लोगों को पदमश्री दिया गया। कहने का तात्पर्य ये है कि सरकार की कोशिश है कि देश के हर कोने में, हर व्यक्ति के पास कुछ न कुछ है देने के लिए। हम इसे जोड़ना चाहते हैं। और सरकार को फाइल से बाहर निकाल करके जनजीवन के साथ जोड़ना चाहते हैं, ये Two-way हमारा प्रयास है। और उसी के फलस्वरूप एक व्यवस्था हमने बनाई,

ये ठीक है इसमें हर एक को लगता होगा कि भई नहीं वो आया होता तो अच्छा होता, उसको बुलाया होता तो अच्छा होता। कई सुझाव होंगे। लेकिन ये पहला प्रयास था। पूरी तरह सरकारी प्रकार का प्रयास था और इसलिए इसमें कमियां भी बहुत हो सकती हैं। हमारे सोचने के तरीके में भी कमियां हो सकती हैं। लेकिन मैं चाहता हूँ कि ये जो प्रयोग हैं, इसको हम Institutionalize कैसे करें? इसको Yearly-event कैसे बनाएं? और उसको एक प्रकार से Government के extension के रूप में, जैसे आप लोगों ने 6 group बनाए, 6 group में भी एक group में पांच-पांच अलग विषयों पर आपने focus किया, अलग-अलग बातों पर focus किया।

अब मेरे मन में विचार आ रहा है कि क्या यही group उस concerned Ministry के साथ permanent जुड़ सकते हैं? जिनहोंने digital पर काम किया, वो ही अगर अपना समय offer करते हैं तो मैं सरकार में जो Digital India का काम देख रहे हैं, उन अफसरों के साथ, उस मंत्री के साथ एक टोली बना दूं। हर महीने वो बैठें, नई-नई बातों पर चर्चा करें, क्योंकि जैसा यहां पर सूची बता रही थी कि लोगों को, भई मुझे तो मालूम नहीं है, मैं तो नहीं जानता digital क्या होता है। ये सिर्फ सामान्य मानव का नहीं है, सरकार में भी है जी। सरकार में digital का मतलब है hardware खरीदना। सरकार में digital का मतलब है कि पहले जैसे flowerpot रखते थे अब एक बढ़िया सा Laptop रखना। ताकि कोई भी visitor आए तो लगे कि भई हम modern हैं। तो इस सोच वाली सरकार होती है कि, अब 50-55 के बाद वो भारत सरकार में लोग आते हैं, अब आप 30 के नीचे का दिमाग रखते हो, मैं इन दोनों को मिलाना चाहता था। ये इसकी शुरुआत है। और मेरे लिए खुशी की बात ये है कि आज सरकार में मेरे साथ जो team है, सचिवों की, मंत्रियों की, अगर मान लीजिए एक 200 लोगों की team मैं मान लूं, मेरा उनसे लगातार interaction होता है और प्रधानमंत्री के रूप में नहीं होता है। मैं colleague की तरह उनके साथ अपना समय गुजारता हूँ। अब पिछले तीन साल के अनुभव के बाद मैं कह सकता हूँ कि जैसे वो किसान खेत जोतता है ना, बारिश आएगी, कब आएगी पता नहीं, फसल कौन सी कैसी होगी, पता नहीं, फसल होगी तो बाजार में मूल्य मिलेगा; लेकिन फिर भी वो खेत जोतता रहता है। मैंने भी मेरे 200 लोगों के दिमाग में जोतने का काम बहुत किया है। और मैं अनुभव से कह सकता हूँ, कि आज वो किसी भी विचार-बीज को accept करने के लिए लालायित है, उत्साहित है, और पूरी तरह उसके साथ जुड़ने को तैयार है। ये अपने-आप में मैं समझता हूँ बहुत बड़ा बदलाव है। सरकार की मेरी senior team हर नई चीज को खोजने के लिए, समझने के लिए, स्वीकारने के लिए obstacle बनने के बजाय उसमें opportunity ढूँढ रही है, और प्रयास कर रही है। इसी एक कारण से मेरी हिम्मत बढ़ी है, आप लोगों को मेरे साथ जोड़ने की। अगर वही obstacle होता, मैं नहीं करता, सोचता भी नहीं। क्योंकि आज आप ही लोग यहां से 6 महीने के बाद जा करके negativity के सबसे बड़े reason बन जाते। अब मैं आप कहता, छोड़ो यार, सब बात तो बहुत करते हैं, सब ऐसे ही हैं। लेकिन ये मैं हिम्मत इसलिए कर रहा हूँ कि मुझे मालूम है कि मेरी main team है, वो नई चीजों को स्वीकारने के लिए बहुत उत्साहित है। आपने जितनी बातें बताई हैं, आपने कल भी उनके साथ चर्चा की है आज भी वो लोग यहां बैठे हैं, कुछ लोग उसमें से। तो ये प्रयास हमें लंबा चलाना है, हमें आगे बढ़ाना है।

आप लोगों से भी मेरा आग्रह है कि आप में से बहुत लोग हैं जो एक-दूसरे को पहली बार रुबरु में मिले होंगे। शायद सुना होगा, पढ़ा होगा, social media में जाना होगा कि कोई एक सज्जन है जो इस दिशा में ऐसा कुछ कर रहे हैं। अब आपका एक परिचय हुआ है, आपकी एक team बन रही है। हो सकता है सभी 212 लोगों की नहीं बनी होगी, लेकिन जो 30-35 का group बना होगा, उनको जो जरूर परिचय आया होगा; सोचने का तरीका क्या है सामने वाले का, contribution क्या है, सब आपने evaluate किया होगा।

किसी ने ज्यादा समय खा लिया वो भी आपको पता रहा होगा। कौन यहां अपना व्यवसाय के लिए networking में टाइम लगा रहा है तो वो भी आपको पता चला होगा। सब कुछ आपको ध्यान आ गया होगा। और इसलिए आपको पूरा Plus-Minus Point मालूम है। मुझे विश्वास है कि आप इसके द्वारा अपने तरीके से इन्हीं विषयों; विषय मत छोड़िए; और नया दुनियाभर में अचानक कोई भी घटना आ जाए उस में मत पड़िए। ये जिन चीजों पर आपने काम किया है, जैसा चीजें बदलती जाएं उसमें जोड़ते जाएं क्या? और उसको आप modify करेंगे, और sharpen करेंगे, काफी focus, अब ये ideas हैं। क्या आप ideas के साथ roadmap भी बना सकते हैं क्या? Achievement के लिए आप इसी चीज के resource क्या होंगे। Institutional arrangement क्या होगा, सरकार है तो नियमों से चलती है तो नियम बदलने हैं, तो नियम कैसे बदलेंगे, कौन से नियम होने चाहिए। सरकार कागज पर चलती है। जब तक चीज कागज पर नहीं उतरती है, सरकार में कोई चीज नीचे नहीं उतर सकती, इसके लिए आप क्या कर सकते हैं? कैसे जोड़ सकते हैं? क्या आपमें से कोई lead करके, भई चलो एक महीने के बाद दोबारा कहीं बैठेंगे। आप देखिए, आप बहुत बड़ा contribution कर सकते हैं। आप एक अपने तरीके से एक digital platform तैयार कर

सकते हैं। आप ही की team का कोई lead करे, और उस digital platform से आप अपने तरीके से नए-नए लोगों को invite कीजिए। हो सकता है आप महीने में एक बार Google hangout से conference भी करें, debate करें, कभी साल में एक-दो बार मिलने का करें। अगर ये चीजें आपने की, और ये मंथन चलता रहा, तो आपको सरकार में समय पर चीजें देने की एक ताकत आएगी। और समय पर जब चीज आती है तो बहुत बड़ा बदलाव आता है जी।

कभी-कभार सरकारी तंत्र की अपनी कठिनाइयां भी हैं, अपनी खूबियां भी हैं। उन कठिनाइयों के बीच आप कभी मददगार हो सकते हैं। और हमारा देश ऐसा नहीं कि कोई बहुत बड़ा extraordinary चीजों की जरूरत है। छोटी-छोटी चीजें बहुत बड़े परिवर्तन लाती हैं जी। और कोशिश ये आपने, आप अपना थोड़ा सा ही सरकार काम को देखेंगे, छोटे-छोटे इतने परिवर्तन हुए हैं और जो सारी व्यवस्थाओं को बदल देते हैं। अब जैसे एक simple सा व्यवहार, आप मुझे बताइए मेरे देश का सामान्य नागरिक सरकार ने उस पर भरोसा करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए? सच्चा-सीधा जवाब है जी, करना चाहिए।

लेकिन सरकार elected corporator पर भरोसा करती है, elected MLA पर भरोसा करती है, सरकार Gazetted Officer पर भरोसा करती है। और ये कानून क्या था कि अगर आपका कोई certificate है और आप आपको कहीं apply करना है, तो उसको certify कराने के लिए उसके घर जाना पड़ेगा, वो एक ठप्पा मार देगा और वो तो देखता भी नहीं है। बाहर एक लड़का बैठा होता है, जो भी आए उसको सिक्का लेकर ठप्पा मारता रहता है, और आप certify ले करके फिर सरकार को भेजते हैं। मैंने आकर कहा भई क्या जरूरत है? Self certificate करने दो ना, self attest करने दो ना, निकाल दिया। चीज छोटी है लेकिन इसमें message बहुत बड़ा है कि मुझे मेरे देश के लोगों पर भरोसा है। बीच में, बीच में कोई व्यवस्था की जरूरत नहीं, हां, जब final आपका interview call होगा, या जब निर्णय करना होगा, तो आपके original document दिखा दीजिए उस दिन। ऐसे आपको शायद इस सरकार में तीन साल में हजारों चीज लगेगी, जिसने चीजों को, अब देखिए, हम corruption की यहां चर्चा हो रही थी, और कुलीन बता रहा था कि हम judicially को ठीक करेंगे तो सब हो जाएगा। कुलीन कर सकता है।

दरअसल, देखिए हम परिवार में या cash रखते हैं या jewellery रखते हैं, ताला लगाते हैं। क्या ये ताला चोर के लिए होता है क्या? डाकू के लिए होता है क्या? वो तो पूरी तिजोरी उठाके ले जाने की ताकत रखता है, आपके उस ताले तोड़ने की ताकत रखता है। ये उसके लिए नहीं है, ये इसलिए है कि घर में बच्चों की आदत खराब न हो। ये व्यवस्था आप इसलिए बनाते हैं, कि घर में बच्चों को आदत न लग जाए, अपने-आप खोल करके कुछ लेने की आदत लग जाए और जेब में डाल करके बाहर फालतु की आदतों में पड़ न जाएं। हम अपनी व्यवस्थाओं को अपने स्वयं को discipline के लिए व्यवस्था विकसित करते हैं। Corruption भी दुर्भाग्य से institutionalized हो गया है। जब तक आप counter-institutional arrangement नहीं करते हैं, आप उसको रोक नहीं पाते हैं।

अब जैसे हमारे देश में इतने दलाल हैं जी, क्योंकि उनको भी तो रोजी-रोटी चाहिए। वो भी एक रोजगार का क्षेत्र है और ऐसे लोग जो बेकार हो गए, वो बहुत चिल्ला रहे हैं इन दिनों; रोजगार नहीं है, रोजगार नहीं है। गरीब घर में ऐसे कई लोग जाते हैं कि बस 50 हजार रुपया दीजिए, बेटे को peon का नौकरी दिलवा दूंगा, बस 20 हजार रुपया दीजिए, इस vacation में temporary job दिलवा दूंगा, ऐसे दलाल घूमते रहते हैं। हमने आ करके तय किया कि Class-III और IV में. कोई मूझे बताए क्या logic है interview का? और ऐसा कौन सा विश्व में मनोविज्ञान तैयार हुआ है, कि जो कोई कमरे में एक व्यक्ति इधर से घुसता है, तीन लोगों की panel बैठी है, वो 30 सेकंड में वहां से गुजरता है, वो देखते हैं किसी को फुरसत है तो पूछते हैं। अच्छा-अच्छा, interview हो गया।

मैंने साहब अभी ऐसा तो scanner कहीं पढ़ा नहीं, सुना नहीं। इसका मतलब ये गड़बड़बाजी की है। इस सरकार ने आ करके निर्णय कर दिया, सरकार ने 65% से ज्यादा रोजगार इन लोगों का होता है। मैंने सारे interview खत्म कर दिए, आपकी merit list पर कम्प्यूटर तय करेगा, जो top merit में होंगे उसको job मिल जाएगा, हो सकता है 2%, 5% ऐसे भी लोग आ जाएंगे जो deserve नहीं करते, लेकिन वो interview में तो 80% ऐसे आते हैं।

कहने का मेरा तात्पर्य ये है कि ये एक ऐसी सरकार है, जो ऐसी institutional arrangement में लगी हुई है कि जिसके कारण व्यक्ति अगर थोड़ा सा भी गड़बड़ हो, व्यवस्था चीजों को संभाल लेगी। और कभी-कभी व्यक्ति का फिसलना संभव होता है, व्यवस्थाएं स्थितियों को बचाए रखने के बहुत काम आती हैं। आज की दुनिया, एक प्रकार से जहां Gap वहां App. सारी जगह App भर रही है। एक प्रकार से interface खत्म होता जा रहा है। और उसमें अब ऐसे लोग भी घुस रहे हैं जो, जिनके लिए cheating करना बड़ा स्वाभाविक है। एक App पर दुनिया भर का काम करके दूसरे महीने में दूसरी App में डाल देंगे और अपना गाड़ी चला लेंगे, लेकिन ये संभावना होने के बावजूद technology revolution जो है, इसका मानवीय जीवन पर बड़ा प्रभाव और एक स्वीकृत प्रभाव पैदा हुआ है। आज technology के लिए कोई resistance नहीं है। और जो लोग कहते हैं, कि ये technology समझ नहीं आती है, उसमें ज्यादातर पुरुष होते हैं, महिलाएं नहीं होती हैं। आप देखिए, most modern technology equipment जो वो होगा, वो सबसे ज्यादा कहीं तुरंत market में चला जाता है, पहुंच जाता है किचन में महिलाओं की पसंद की तरह। सारी महिलाएं यानी एक अनपढ़ महिला में, जो काम करने वाली, किचन में काम करने वाली महिला होगी, उसको भी oven कैसे चलाना है, टिकना कैसे चलाना है, सब technology मालूम हो जाती है।

User friendly technology ने जीवन बदल दिया है। क्या governance में technology सरकार के तौर-तरीकों को बदल सकती है? क्या? आप लोग अलग-अलग field में हैं, एक बात निश्चित है कि innovation ही जीवन है। अगर innovation नहीं है तो एक ठहराव है। और जहां भी ठहराव है, वहां गंदगी है। innovation से ही बदलाव आता है। आप उस field में हैं क्या आप innovation को promote कर रहे हैं अगर कोई handicraft के क्षेत्र में marketing का काम करता है, लेकिन क्या उसने handicraft बनाने वाले को नई technology के साथ, global requirement के अनुसार उस handicraft को आधुनिक समय में modify करने के लिए उसको सिखाया है क्या? अगर वो training भी साथ-साथ करता है तो हम हमारे सामान्य गरीब व्यक्ति जो handicraft के क्षेत्र में काम करता है, उसका एक प्रकार से vocational training कहो, skill training कहो, Technological training कहो, उसको मार्केट की समझ कैसी है, उसको समझाया तो वो थोड़ा बढ़ाकर देता है। Bamboo का फर्नीचर बनाने वाला व्यक्ति भी, अगर हम मार्केट को ध्यान में रखते हुए, बदले हुए युग को ध्यान में रखते हुए, और comfort को ध्यान में रखते हुए चीजें बनाने के लिए हम उसको प्रेरित करेंगे, तो अपने-आप वो अवसर मिल जाएगा।

हमारे यहां जो rural economy है, हमारी पूरी rural economy को सिर्फ हम खेती से न जोड़ें, खेती के सिवाए भी rural economy के साथ बहुत कुछ है। हम इस decentralize व्यवस्था को कैसे बल दें? अब एक समय था हमारे देश में, जब गांव का लोहार गांव की सारी बातों को निपट लेता था कहीं बाहर, गांव के बाहर जाना नहीं पड़ता था। गांव का एक मोची गांव की सारी requirement पूरी कर देता था, गांव को बाहर नहीं जाना पड़ता था। Economy ऐसी बदलती गई कि सबसे बड़ा लोहार बन गया TATA, सबसे बड़ा मोची बन गया BATA और गांव रह गया घाटा। तो ये, ये जो बदलाव आया है, बदलाव बुरी चीज नहीं है, हमने उसमें decentralize व्यवस्था को कैसे जोड़ेंगे? अगर ये हम जोड़ दें तो हम एक ऐसी ताकत बना देंगे, ऐसी व्यवस्था विकसित करते हैं, जो देश में एक economy को sustain करने के लिए काम आती है। क्या आप start-up, ये start-up से कोई fashionable चीज है ही नहीं जी। आपने देखा होगा, एक digital software की दुनिया का जो start-up world है, एक है। लेकिन दूसरे जो start-ups बने हैं, उसने सामान्य-सामान्य समस्याओं का समाधान खोजा है, और rural base को पकड़ा है।

मैं अभी सिक्किम गया था, एकाध साल पहले की बात है। हिन्दुस्तान में सिक्किम पहला organic state है। बहुत कम लोगों को मालूम होगा। पूरा state organic है जी। और 13-14 साल लगातार मेहनत करके उन्होंने organic state बनाया है। और हमारे देश के सभी Himalayan states में organic state capital बनने की संभावनाएं पड़ी हुई हैं। मैं एक बार सिक्किम गया तो उनके उस organic festival के लिए गया था। उसी दिन देश में, देश को सिक्किम को organic state के रूप में समर्पित करने का कार्यक्रम था।

वहां मुझे दो नौजवान मिले, एक लड़का, एक लड़की। वे IIM अहमदाबाद से सीधे pass out हो करके वहां पहुंचे थे। हमारा परिचय हुआ तो मुझे लगा tourist के नाते आए होंगे। तो मैंने पूछा, बोले नहीं, नहीं, हम तो यहीं रहते हैं पिछले छह महीने से। बोला- क्या कर रहे हो? बोले हम लोग यहां की जो organic चीजें हैं, इसका global marketing की दिशा में काम कर रहे हैं और हमारा बहुत ही कम समय में हमारा business बढ़ रहा है।

अब ये देखिए, नई दुनिया है। यानी हमारे जो startups हैं, उसने इन चीजों को पकड़ा है। हम इसको कैसे बल दें? हम इसको कैसे ताकत दें? उसमें हम नई चीजें कैसे लाएं? Waste to Wealth. भारत में आप कल्पना नहीं कर सकते कि इतना बड़ा एक economy का क्षेत्र है Waste to Wealth. इसमें technology है, इसमें innovation है, इसमें recycling है, इसमें सब चीजें हैं; और भारत के लिए आवश्यक भी है। अगर हम इसको बल दें, भारत में recycling नई चीज नहीं है, हमारे देश के पुरातन जमाने में इन चीजों से लोगों को आदत थी। लेकिन बदलाव आया, बीच की कड़ी टूट गई। अब उसको हमें organized way में करना होगा। अगर ये चीजें हम करते हैं, हम परिवर्तन ला सकते हैं।

शिक्षा, अब ये बात सही है कि शिक्षा के क्षेत्र में अब IIM में से campus placement होता है। एक करोड़, दो करोड़, तीन करोड़, ऐसे बोली बोल करके उठा लेते हैं लोग। क्या हम वो dream नहीं देख सकते हैं कि जो टीचर है, उसका भी campus placement हो, और वो भी एक करोड़, दो करोड़ तीन करोड़, पांच करोड़ में बदल जाए। ये संभव है जी, ये संभव है। आप हिन्दुस्तान के किसी भी व्यक्ति को मिलिए, अमीर से अमीर व्यक्ति को मिलिए, गरीब से गरीब व्यक्ति से मिलिए, सबसे ज्यादा पढ़े-लिखे को मिलिए, सबसे अनपढ़ को मिलिए और एक प्रश्न पूछिए, एक जवाब common आएगा, उसके जीवन का मकसद क्या है? बच्चों को अच्छी शिक्षा। किसी को भी पूछिए, अपने ड्राइवर को पूछिए, भई क्या सोचते हो? नहीं साहब, बस बच्चों को अच्छी शिक्षा मिल जाए, मेरी तो जिंदगी ड्राइवरी में पूरी हो गई, उसको मैं कुछ बनाना चाहता हूँ।

साहब मैं कहीं को पूछता हूँ, गरीब व्यक्ति ड्राइवर होगा, liftman होगा, मतलब मैं पूछता हूँ भई, कर्ज-वर्ज तो नहीं है ना? तो बोले, नहीं साहब कर्ज है। कर्ज किस बात का है? बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ने के लिए कर्ज लिया उसने। इसका मतलब हुआ कि देश में सबसे ज्यादा मांग अगर किसी की है, तो best teachers की है। हम इस best teacher निर्माण करने को और सामान्य व्यक्ति को लगे कि भई टीचर बनना एक बहुत बड़ा गौरवपूर्ण काम है, और मैं बहुत कुछ contribute कर सकता हूँ। और अब कई नए model आ रहे हैं, बहुत नए model आ रहे हैं, practical model आ रहे हैं और काफी अच्छे। अब उसमें बहुत बड़ा रोल कर सकती है technology. गरीब से गरीब बच्चे, आपको मालूम होगा। सरकार जब साइलों में चलती है तब किया करती है।

हम इतने satellite छोड़ते हैं, बड़ा गर्व करते हैं। लेकिन कई transponder ऐसे थे, जो unutilized ऐसे ही हवा में लटके पड़े थे। हमने आ करके इन silo को तोड़ा, space को, education को, technology को, सबको इकट्ठा किया। अभी मैंने thirty two transponders dedicated to the education only, और वो आपको घर में, घर में education की एक प्रकार से free of charge delivery दे सकते हैं बच्चों के लिए। यानी quality education without dilution, without diversion, सामान्य व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए technology गरीब से गरीब तक हमें पहुंचा सकती है।

हम technology के द्वारा quality of education में बदलाव कैसे लाएं? अगर quality of education में नीचे से बदलाव आया तो टीचर पर अपने-आप ऐसा pressure आने वाला है कि टीचर को बदलना ही होगा ये स्थिति बनने वाली है। और इसलिए इस सरकार की कोशिश ये है कि इन चीजों में आप जैसे लोग, जिसके पास दुनिया को अलग तरीके से देखने का एक अवसर है, एक sixth sense भी है, उमंग है, उत्साह है, innovations हैं, सोच, ideas हैं। इन चीजों के साथ सरकार को कैसे जोड़ना है, ये मेरी कोशिश है, और उस कोशिश का ये भाग है।

उसी प्रकार से आप भी और आप जैसे अब देशवासी, कई लोग, देखिए सरकार की योजनाओं से हम New India बना लेंगे, ये सोच न मेरी है न सरकार की है। सवा सौ करोड़ देशवासी जब तक New India का संकल्प नहीं लेते हैं, New India के लिए अपने लिए काम नहीं खोजते हैं, उस काम को खुद प्रयत्न करके पूरा नहीं करते हैं, तो वो काम अधूरा रहता है। और इसलिए हमारी कोशिश ये होनी चाहिए और आपसे भी मेरी ये अपेक्षा है, कि आप जहां हैं वहां इस बदलाव में आप एक बात, जैसे आपके, आपके जितने भी, आपके यहां कोई 20 employee होंगे, 50 होंगे, 100 होंगे या हजार होंगे। क्या कभी उनको बैठ करके बात कहोगे? कि बताओ भाई 2022..Twenty Twenty Two, हमने देश को यहां ले जाना है, तुम क्या जिम्मा ले सकते हो? तुम क्या कर सकते हो? और हर व्यक्ति बहुत कुछ कर सकता है। ये वातावरण हम पैदा कर सकते हैं।

कभी-कभी मुझे याद है, मैं जब राजनीति में नहीं था, तो एक बहुत बड़े उद्योगकार, अब वो ज्यादातर Gandhian life जीते थे, सेवाभाव में रहते थे, उनके परिवार के एक व्यक्ति रामकृष्ण मिशन से जुड़े हुए थे, तो मेरा रामकृष्ण मिशन से नाता होने के कारण मेरा उस परिवार से नाता रहता था। तो उन्होंने एक बंद पड़ी हुई, खसता हालत की एक industry purchase की। अब वो बंद क्यों हो गई थी, हड़ताल और यूनियनबाजी इन सबसे हो गई। तो मैंने ऐसे ही उनको पूछा, मैंने कहा ऐसा risk कैसे लिया आपने? और ये क्या हुआ, क्या परिणाम आया? तो उन्होंने मुझे simple सा बताया। बोले कुछ नहीं, हमने ले लिया, और मैंने पहले दिन से वहां जाना शुरू किया, और तय किया था छह महीने मैं regular वहां जाऊंगा। और मैं जो labour management थी, वहां जा करके खाना शुरू किया। बस बैठता था, वहीं खाता था। मेरे इतने छोटे से निर्णय ने सभी मजदूरों की मेरे प्रति सोच बदल गई, उनको मैं मालिक नहीं लगता था, मुझे वो मजदूर नहीं लगते थे। वो जो खाते थे मैं खुद उनके टेबल पर वहीं खाता था, और psychological परिवर्तन ये आया कि वो मेरे परिवार के सदस्य बन गए और उन्होंने मेहनत ऐसी की, छह महीने के अंदर डूबी हुई फैक्टरी जो मैंने ली थी, वो कमाऊ बच्चा हो गई। कहने का तात्पर्य ये है, कि क्या कभी आपने भी अपने साथियों को भी कहिए कि आपके यहां जो काम करने वाले लोग हैं छोटे-छोटे लोग हैं, उनके घर में 12 साल का, 15 साल का, 18 साल का बच्चा होगा। क्या साल में एक-दो बार उनको इकट्ठा किया? उनको इकट्ठा कर-करके उनको motivational कोई अच्छी बातें की क्या? देश में बुराईयां न करना ऐसा कुछ समझाया क्या?

अब देखिए, जैसे ही आप उनके बच्चों से अपना नाता जोड़ोगे, उसको increment मिले या न मिले, bonus मिले या न मिले, वो आपके लिए जीवन भर समर्पित हो जाएगा, आप देखते रहिए। मुझे ये बदलाव लाना है। मुझे ये बदलाव लाना है। आप मुझे बताइए सरकार की insurance की जो व्यवस्थाएं हैं, एक दिन का एक रुपया। एक insurance ऐसा है जिसमें महीने का एक रुपया। क्या आपके अपने employee का भारत सरकार ने इतना बड़ा अच्छा package दिया हुआ है, इतनी बढ़िया product है, क्या आपने उनको, 500 रुपया अगर उनके बैंक में जमा कर दिया आपने fix deposit में, उसकी yearly insurance की फीस चली जाएगी। और उसके जीवन में कुछ हुआ तो दो लाख रुपया और दोनों ही insurance हैं तो चार लाख रुपया अपने आप उस गरीब के घर पहुंच जाएंगे।

सरकार की योजनाएं, जो सीधी-सीधी आपके साथ काम करने वाले लोगों से जुड़ी हुई हैं, क्या आप उसको बढ़ावा दे सकते हैं क्या? आप आपने देखा होगा, सुबह हमारे गौरव ने आपको digital platform जो सरकार के, उसके विषय में बताया होगा। आप में से बहुत लोग digital दुनिया में होंगे लेकिन इस particular area में enter नहीं किए होंगे। क्या इसको large scale में enter हो करके आप स्वयं सरकार को push कर सकते हैं क्या? आप सरकार को drive करने में भागीदार बन सकते हैं क्या? ये जो हमारा नाता जितना जुड़ेगा, उतना मैं समझता हूँ कि हम परिवर्तन की दिशा में जो जाना चाहते हैं, हम बहुत ताकत के साथ जा सकते हैं। और हम कुछ भी हैं, हिन्दुस्तान के नागरिक हैं। किस पद पर है, किस व्यवस्था में हैं, किस दुकान पर बैठे हैं, किस industry को चला रहे हैं, लेकिन हम सब मिल करके एक हिन्दुस्तान हैं। सवा सौ करोड़ देशवासियों में भाव भरना ये मेरा एक कोशिश है, और मुझे, मुझे आप लोगों का साथ चाहिए।

ये ठीक है मैं भी जितनी चीजें सोचता हूँ, सारी कर पाऊंगा, प्रधानमंत्री हो तो हो जाती हैं, ऐसा नहीं है जी। मुझे भी अपने-आपको व्यवस्थाओं के बीच से जाना होता है। इसलिए हो सकता है आपके 50 सुझाव में से 40 सुझाव शायद आगे न भी चलें, लेकिन 10 सुझाव भी अगर आगे चलते हैं, तो देश को बहुत बड़ा मूल्यवान आपका योगदान होता है। इस भाव से हमारा प्रयत्न जारी रहना चाहिए, ऐसा कभी निराशा नहीं आनी चाहिए, यार बातें तो बहुत होती हैं, सोचते तो बहुत होते हैं, लेकिन मैंने जो कहा था नहीं हुआ, तुमने जो कहा नहीं हुआ, लेकिन तुम में से कहा हुआ, बहुतों ने कही हुई, बहुत सी चीजें हुई हैं, जिसके कारण परिवर्तन आ रहा है, ये हमने करना है। हो सकता है कभी-कभी व्यवस्थाओं को अच्छी चीजें बहुत उम्दा होने के बाद भी, accept करने के लिए capacity न हो, लेकिन धीरे-धीरे उसकी पाचन शक्ति बढ़ेगी तो अच्छी-अच्छी नई योजनाएं भी आएंगी, नई योजनाओं का स्वीकार होगा। इस मूड में अगर आप हमारे साथ लगते हैं।

और मैं चाहता हूँ कि yearly इसको institutional mechanism बनाना है तो इसको और अच्छा कैसे बनाया जाए, आप feedback देने वाले हैं। आप बाद में email पर भी काफी चीजें, सुझाव दे सकते हैं। आप व्यक्तियों के समझ में भी सुझाव दे सकते हैं, आप इस कार्यक्रम के तरीके के संबंध में भी सुझाव दे सकते हैं। लेकिन मुझे विश्वास है, क्योंकि कल भी मैं शाम को आया था, सबसे आपसे मेरा मिलना हुआ था। आज भी मुझे आप सबके विचारों को जानने का अवसर मिला, कितने नए तरीके से आप चीजों को सोच सकते हैं, कितने नए तरीकों से चीजें प्रस्तुत कर सकते हैं।

सरकार में जो चीजें, अब जैसे मैंने एक छोटा सा प्रयोग किया। एक हमने प्रयोग किया Hackathon का। College students के साथ किया और सभी IITs वगैरह students को हमने invite किया था। First round में करीब 40 हजार students ने हिस्सा लिया। मैंने सरकार में कहा कि भाई तुम्हारे यहां जो काम करते-करते कठिनाई महसूस होती थी, problem लगती हैं, उसका solution तुम्हारे पास नहीं है, ऐसी चीजों की list बनाओ। तो शुरू में resistance था। Resistance ये था कि मैं secretary हूँ, मैं joint secretary हूँ, मैं director हूँ, मैं कैसे बताऊं मेरे यहां प्रश्न हैं, मैं कैसे बताऊं मेरे यहां problem का solution नहीं है। फिर तो मेरी बेइज्जती होगी। तो शुरू में बड़ी मुश्किल था बताना भी। तो हम, हमारे ऑफिस के लोग लगे रहे, आखिरकार उन्होंने करीब 400 ऐसे issue छोटे, कि इसका कोई solution खोजना चाहिए। पहले उनको लगता ही नहीं था कोई problem है। अब मैंने उन 400 issues को इन बच्चों को दे दिया, students को, कि भई आप लोग Hackathon कीजिए, इसके solution लाइए। और उन्होंने 40-40

घंटे non-stop university campus में काम किए, 40 हजार हिन्दुस्तान की purely around for sixteen to eighteen age group, इन्होंने दिमाग खपाया, और आपको जान करके आनंद होगा, इतने बढ़िया-बढ़िया उन्होंने solution दिए हैं। रेलवे वालों ने दूसरे ही दिन उन लोगों को मीटिंग की और बुला करके उसमें से कुछ चीजें adopt कर दीं और रेलवे के सिस्टम में लागू कर दीं। सारे department ने उस solution को अपने यहां incorporate करने का प्रयास किया है।

अगर मेरे देश के 16 से 18 साल की उम्र के नौजवान, जिसके पिताजी को पूछो, बेटा क्या करता है, तो 10 minus mark दे देगा, लेकिन वो ही नौजवान मेरे देश के लिए इतना काम आ सकता है। ये मेरी कोशिश है, 40 हजार इन नौजवानों के काम में। आप में भी, आप में वो सामर्थ्य है। और मैं नहीं मानता हूं कि देशभक्ति मेरे में और आप में कोई अन्तर है। हम सबमें समान देशभक्ति है, हम सबमें, मन में, हमारा देश आगे बढ़े, हम सबकी इच्छा है। और काम के लिए अवसर बहुत हैं।

हम मिल करके काम करेंगे तो बहुत ही उत्तम परिणाम मिलेगा, ये मेरा विश्वास है। मैं फिर एक बार आप लोगों ने क्योंकि कहते हैं भई समय बड़ा मूल्यवान होता है। औरों को हो न हो, रुपये-पैसे की दुनिया वालों का तो जरूरत होता है। और उसके बाद भी आपने समय दिया, मूल्यवान समय दिया, इसके लिए मैं सरकार की तरफ से आपका हृदय से बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं, लेकिन मैं आशा करता हूं कि आप लोग जुड़े रहेंगे। हमारी स्टोरियों को बढ़ाते चलेंगे हम। फिर कभी topic wise हम मिल सकते हैं, कभी reason wise मिल सकते हैं, हम अलग-अलग तरीके से मिल सकते हैं। लेकिन हम चीजों को बढ़ा सकते हैं। मेरी आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं। धन्यवाद।

अतुल तिवारी/ शाहबाज हसीबी/ हिमांशु सिंह/ निर्मल शर्मा

(Release ID: 1500037) Visitor Counter : 29